जमाअत अहमदिय्या
के बारे में पैदा की जाने वाली
ग़लत.फ़हमियों का इज़ाला

लेखक :

मौलवी मुहम्मद करीमुद्दीन शाहिद

प्रिंसीपल मदरसा अहमदिय्या, क़ादियान

(जलसा सालाना कादियान, दिसम्बर 1978 के अवसर पर दिए गए भाषण का हिन्दी अनुवाद)

प्रकाशक:

नज़ारत-नश्र-व-इशाअत

सदर अंजुमन अहमदिय्या, क़ादियान

JAMAAT AHMADIYYA KE BARE MEIN PAIDA KI JANE WALI GHALAT FAHMION KA IZALA

(Removal of some Misconceptions promulgated against Jamaat Ahmadiiya)

by :

MUHAMMAD KARIMUDDIN SHAHID

PRINCIPAL, MADRASSA AHMADIYYA, QADIAN

(Hindi Translation of the Speech delivered at Jalsa Salana, Qadian in Dec. 1978)

Hindi Translation by :

BUSHRA TAYYIBA GHORI

JUNE : 1996

COPIES : 3000

Published by :

NAZARAT NASHR-O-ISHAAT

SADAR ANJUMAN AHMADYIA, QADIAN—143516

DISTT. GURDASPUR (PB.) INDIA

PH : 0091-(O) 1872-20749

FAX : 0091-(O) 1872-2015

Printed at

Fazle Umar Offset Printing Press, Qadian

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

जमाअत अहमदिय्या के बारे में पैदा की जाने वाली ग़लत-फ़हमियों का इज़ाला (तोड़)

क़ुर्आन मजीद के पढ़ने तथा उस पर विचार करने से पता चलता है कि हर अवतार और भगवान की ओर से नियुक्त किये जाने वाले महान पुरुष की जमाअत के विरुद्ध उन के विरोधियों ने तरह तरह की झूठी बातें बना कर ग़लत फ़हमियां (भ्रांतियां) फैलाईं। और कई प्रकार की घटना विरोधी बातों को ऐसे बढ़ा चढ़ा कर और झूठ से प्रसिद्धि दी कि बहुत सी जनता उनके इस जाल में फंस गई और फिर उन्होंने अवतारों और महापुरुषों और उन की जमाअतों को मिटाने और दुनिया से उनका नाम ख़त्म कर देने की कोशिश में कोई कसर न उठा रखी। अतः हे अहमदिय्यत के सपूतो ! आज यदि सय्यदना हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम और हमारे बारे में ग़लत फ़हमियाँ फैलाई जाती हैं तो यह भी हमारी सच्चाई की एक ऐसी ही दलील है जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक दलील क़ुर्आन मजीद में बताई गई है कि :

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ۝ (حٰمٓ السجدة: ٤٤)

अर्थात : हे रसूल ! तुझ पर जो एतराज़ (आपत्तियां) किये जाते हैं वे वही एतराज़ हैं जो पहले अवतारों पर किये गये और तेरे विरोधी तुझ से वही (सलूक) व्यवहार और (मामला) कर रहे हैं जो पहले अवतारों के विरोधियों ने अपने रसूलों से किया था और यही बात हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने बारे में "हक़ीक़तुल वही" पृष्ठ 137 में फ़रमाई है :

"मैं बार बार कहता हूं कि यदि यह सारे विरोधी, पूर्व और पश्चिम के, इकट्ठे हो जाएं तो मेरे पर कोई ऐसा एतराज़ नहीं कर सकते कि जिस एतराज़ में पिछले अवतारों (नबियों) में से कोई शरीक न हो।"

इसी प्रकार जमाअत अहमदिय्या के बारे में जो ग़लत फ़हमियां फैलाई जाती हैं वे ऐसी नहीं हैं जिन में अल्लाह तआला के पहले मामूरीन (भगवान की ओर से नियुक्त महापुरुष) और अवतारों की जमाअतें न हों। इस लिये मैं सब से पहले जमाअत अहमदिय्या का संक्षिप्त परिचय आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ।

जमाअत अहमदिय्या का परिचय

जमाअत अहमदिय्या वर्तमान काल में हज़रत इमाम महदी वह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा संस्थापित उस जमाअत का नाम है जो पूर्ण रूप से धार्मिक एंव इलाही तहरीक है। और जिसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस जमाअत को स्थापित करने का उद्देश्य यह है कि नाम के मुसलमानों को सच्चे मुसलमान बना कर उन में ठीक इस्लामी आत्मा पैदा की जाए और उन में इस्लामी प्रणाली को जारी किया जाए अर्थात उन के द्वारा धर्म को पुनर्जीवन प्रदान हो और शरीयत को स्थापित किया जाए। हां यह वही जमाअत है जिसके बारे में क़ुर्आन शरीफ ने:

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (الجمعہ: ۴)

(और इनके सिवा एक दूसरी जाति के लोगों में भी वह इस को भेजेगा जो अभी तक इन से नहीं मिली)

(सूरत अलजुमुअः 4)

कह कर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पुनरावतरण में इस्लाम के पुर्नोत्थान को स्थापित करने का बीड़ा उठाने वाली जमाअत और पवित्र क़ुर्आन की आयतः

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ (الصّف: ۱۰)

(अर्थात समस्त धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान करे)

(सफ़ः 10)

के अनुसार इस्लाम के प्रचार को मज़बूत, संगठित और व्यवस्थित बुनियादों पर स्थापित करके इस्लाम की विजय यात्रा को पूरा करने वाली **जमाअत** कहा है। और ख़ुदा के फ़ज़ल से इस जमाअत ने अपने जीवन के नव्वे (106 वर्षीय-अनुवादक) वर्षीय युग में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम और आपके पश्चात आपके पवित्र ख़लीफ़ाओं के पवित्र और कुशल नेतृत्व में विरोधियों और शत्रुओं का घोर विरोध, शत्रुता एवं रुकावट के होते **हुए** भी इस्लाम की विजय यात्रा को इस सीमा तक सफल बनाया है कि विश्व में चारों ओर न केवल अहमदिय्यत को प्रसिद्धि प्राप्त है बल्कि सफल व सरगरम प्रचार केन्द्र व मस्जिदें, स्कूल व कालिज तथा अस्पताल स्थापित हैं, और क़ादियान की बस्ती से उठने वाली हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की वह अकेली आवाज़ जिसे विरोधियों ने दबा देना **चाहा** था आज सारे संसार में एक करोड़ से अधिक अहमदी मुसलमानों के **दिल** की धड़कन बन कर धड़क रही है और आज हम बड़े गर्व से यह **कह** सकते हैं कि अहमदिय्यत पर सूर्य अस्त नहीं होता और जमाअत अहमदिय्या के द्वारा इस्लाम की विजय की यह महान यात्रा इस रूप में जारी **है कि** हमारे वर्तमान इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस (रहेमहुल्लाह ताला) के फ़रमान के अनुसार जमाअत अहमदिय्या के जीवन की दूसरी शताब्दी इन्शाअल्लाह इस्लाम की विजय की शताब्दी होगी जिसका स्वागत करने की तैयारी में हम व्यस्त हैं। (दूसरी सदी का शानदार स्वागत हम कर चुके हैं अनुवादक)

जमाअत अहमदिय्या का उद्देश्य

परन्तु जमाअत अहमदिय्या की यह उन्नति, इस्लाम की इस विजय यात्रा के महान कार्यक्रम और वास्तविक इस्लामी समाज की स्थापना, हमारे मुसलमान विद्वानों को एक आँख न भाई और बजाए इसके कि **वे** इस धार्मिक जमाअत के साथ मिल कर इस्लाम के प्रचार के कर्त्तव्य **को** संगठित रूप से पूरा करते, अपनी अयोग्यता एवं स्वार्थता पर पर्दा डालने

के लिये इस शुद्ध इस्लामी जमाअत को इस्लाम की सीमा रेखा से निकालने का फ़ैसला करके काफ़िर घोषित कर दिया और (मुसलिम वर्ग) में इस जमाअत के विरुद्ध यह मिथ्या विचार फैलाए कि इस जमाअत का इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं हैं। यह इस्लाम के समान एक अन्य धर्म है और यह एक बुनियादी और नई मिल्लत है। जबकि यह बात हक़ीक़त और जमाअत के सिद्धांतों के सरासर विरुद्ध, ग़लत और आधारहीन इलज़ाम है। ऐसा करके उन विद्वानों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के इस फ़रमान और इस भविष्यवाणी को सत्य प्रमाणित कर दिया है कि:

عُلَمَاءُهُمْ شَرُّ مَنْ تَحْتَ اَدِيْمِ السَّمَآءِ مِنْ عِنْدِهِمْ تَخْرُجُ الْفِتْنَةُ وَفِيْهِمْ تَعُوْدُ ۔ (مشکوٰۃ)

अर्थात उन औपचारिक और तथा-कथित मुस्लिम विद्वान आकाश के नीचे सबसे अधिक बुरे लोग होंगें। वह लड़ाई व फ़ितने का स्रोत होंगे। इसी लिये अल्लामा इक़बाल ने कहा है कि:

दीने मोमिन फ़िकरो तदबीरे जिहाद
दीने मुल्ला फ़ी सबीलिल्लाह फ़साद

अत: अहमदिय्यत कोई नया धर्म या मज़हब या मिल्लत हरगिज़ नहीं है। बल्कि यह हक़ीक़ी इस्लाम ही का दूसरा नाम है। और हर अहमदी के दिल और रग रग में इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और क़ुर्आन करीम का प्रेम और इश्क़ रचा हुआ है। लीजिए हमारे दिल की आवाज़ जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम के शब्दों में पढ़िए। आप अपनी किताब "अय्यामुस्सुलह" के पृष्ठ 86-87 में फ़रमाते हैं:

"याद रहे कि हमारे विरोधी, लोगों को जितनी घृणा दिला कर हमें काफ़िर और बेईमान ठहराते हैं और आम मुसलमानों को यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि यह आदमी तथा इसकी जमाअत इस्लाम के सिद्धान्तों और धर्म के नियमों से दूर है यह उन इर्ष्यापूर्ण मौलवियों के वे झूठ हैं कि जब तक किसी के दिल में एक कण के बराबर ईश्वर का डर हो, ऐसे

झूठ नहीं बोल सकता, जिन पाँच बातों पर इस्लाम का आधार है वे हमारे सिद्धान्त हैं। और जिस ख़ुदा के कलाम यानी क़ुर्आन को पंजा मारने का हुकम है हम उसको पंजा मार रहे हैं। और फ़ारूक़ रज़ीअल्लाह तआला अन्हो की तरह हमारी ज़बान पर 'हस्बुना किताबुल्लाहि' और हज़रत आइशा रज़ीअल्लाह तआला अन्हा की तरह जब हदीस और क़ुर्आन में मतभेद पैदा हो तो क़ुर्आन को हम श्रेष्ठता देते हैं और विशेष कर क़िस्सों में जो सामूहिक रूप से रद्द करने के योग्य भी नहीं हैं। और हम इस बात पर ईमान लाते हैं कि ख़ुदा तआला के सिवा कोई पूजनीय नहीं और सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके रसूल और ख़ातमुल अम्बिया हैं। और हम ईमान लाते हैं कि वास्तव में फ़रिश्ते हैं, प्रलय सच है, और हिसाब किताब का दिन सच और (स्वर्ग) जन्नत सच और जहन्नुम (नरक) सच है। और हम ईमान लाते हैं कि जो कुछ अल्लाह तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ में फ़रमाया है और जो कुछ हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है, वह सब उपरोक्त बयान के अनुसार सच है। और हम ईमान लाते हैं कि जो व्यक्ति इस शरीयते इस्लाम में से एक अंश भी कम करे या एक अंश अधिक करे या कर्त्तव्यों का पालन न करने और नाजायज़ बातों को जायज़ बनाने की नींव डाले वह बेईमान और इस्लाम से दूर हटने वाला है। और हम अपनी जमाअत को नसीहत करते हैं कि वह सच्चे दिल से इस कलिमा तय्यबा पर ईमान रखें कि:

ला इलाहा इलल्लाह
मुहम्मदुर्रसू लुल्लाह

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

और इसी पर मरें। और तमाम अवतार और तमाम किताबें जिनकी सच्चाई क़ुर्आन शरीफ़ से स्पष्ट है उन सब पर ईमान लावें। और रोज़ा (उपवास) और नमाज़ और ज़कात और हज और ख़ुदा तआला और उस के रसूल के नियुक्त सारे कर्त्तव्यों को कर्त्तव्य समझ कर और सारी रोकी गई बातों से रुक कर ठीक ठीक इस्लाम पर क़ायम हों। अतः वे सारी बातें जिन पर पुराने बुज़ुर्ग सैद्धांतिक रूप से सहमत थे और वे उन्हें कार्य

रूप भी देते थे। और वे बातें जो अहले सुन्नत की सामूहिक दृष्टि में इस्लाम क़हलाती हैं उन सब का मानना फ़र्ज़ है। और हम आकाश और धरती को इस बात पर साक्षी बनाते है कि यही हमारा धर्म है।

इसी प्रकार आपने फ़रमाया।

"हम तो रखते हैं मुसलमानों का दीं।
दिल से हैं ख़ुद्दामे ख़तमुल मुरसलीं,
शिरक और बिदअत से हम बेज़ार हैं।
ख़ाके राहे अहमदे मुख़तार हैं,
सारे हुकमों पर हमें ईमान है।
जानो दिल इस राह पर क़ुर्बान हैं,"

बुनियादी और हक़ीक़ी मतभेद

जब हज़रत बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या और हम अहमदियों का यह यक़ीन है जिसका हमें दिल की गहराइयों से इक़रार है और उसे प्रकट करते हैं कि हम मुसलमान हैं तो फिर यह सवाल पैदा होता है कि वह कौन से ऐसे विरोधी तत्व हैं जिनके कारण हमारे मुसलमान भाई हमें मुसलमान नहीं समझते। इस सम्बन्ध में जो बड़ी भ्रान्तियां हैं उनका जवाब तो बाद में दूंगा सब से पहले मैं इस बात की व्याख्या करना ज़रूरी समझता हूँ कि अहमदियों और दूसरे मुसलमानों के बीच यदि कोई बुनियादी और वास्तविक मतभेद है तो वह केवल वफ़ात-व-हयात-ए-मसीह (हज़रत ईसा की मौत और जीवन) की समस्या है। अर्थात यह समस्या हम में और ग़ैर अहमदी मुसलमानों में एक केन्द्रीय और असली मतभेद है। इस के अतिरिक्त जितने मतभेद हैं उन की बिल्कुल साधारण स्थिति है। अतः हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"याद रहे कि हम में और इन लोगों में केवल इस एक समस्या के सिवाए और कोई विरोध नहीं। मतलब यह कि यह लोग क़ुर्आन और हदीस के बयान को छोड़ कर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के

जीवित होने को मानते हैं। और हम क़ुर्आन और हदीस में **बयान** किये गए नियम और बुज़ुर्गों के सामूहिक विचार के अनुसार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मौत पर यकीन रखते हैं।''

(अय्यामुस्सुलह पृष्ठ 88)

अतः क़ुर्आन मजीद और हदीसों से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ऐसे पक्के तर्क विद्वानों के सामने रखे कि जिस से यह साबित हो जाता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम न तो जीवित आसमान पर उठाए गए और न ही अब तक वहां जीवित मौजूद हैं। बल्कि वह दूसरे अवतारों की तरह अपनी प्राकृतिक आयु बिता पर 120 वर्ष की आयु में परलोक सिधार गये और उनकी क़ब्र श्री नगर के मुहल्ला ख़ानियार में मौजूद है। इस बारे में भी आपने बौद्धिक और ऐतिहासिक दलीलें दीं जो आपकी किताबों मे लिखी हुई हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि विरोधी विद्वानों ने आपके ख़िलाफ कुफ़्र और झूठ, विरोध एवं दुःख देने का एक तूफ़ान बरपा कर दिया। लेकिन सच्चाई और दलील व प्रमाण को जुल्म और सख़्ती से न कभी पहले ख़त्म किया जा सका और न आगे किया जा सकता है। सच्चाई अन्त में जीत कर ही रही। और अब हाल यह है कि वही मुसलमान जो मसीह के जीवित होने को एक हल की हुई समस्या समझते थे जिसको इस्लाम का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत समझते थे और जिस को कुफ़्र और ईमान की कसौटी समझा जाता था जमाअते अहमदिया की ओर से पेश की गई ज़बरदस्त दलीलों के सामने बेबस हो कर यह कहने पर मजबूर हो रहे हैं कि हज़रत मसीह के जीवित होने या परलोक सिधारे जाने के अक़ीदा का कुफ़्र व ईमान से कोई सम्बन्ध नहीं है।

अतः सय्यद हबीब साहिब ने अपनी किताब *'तहरीके क़ादियान'* के पृष्ठ 167 में लिखा है कि:

''अतः मसीह का जीवित होना आरम्भ से ही आपस में विरोध होने की समस्या रही है और ऐसे लोग मिर्ज़ा साहिब से बहुत पहले मौजूद थे जो मसीह की मौत को मानते थे................लेकिन जैसा कि

मैं निवेदन कर चुका हूँ मसीह के जीवित होने व परलोक सिधारने के सम्बन्ध में हर मुसलमान अध्ययन के बाद अपनी निष्पक्ष राऐ बनाने में आज़ाद है। उसकी यह राए न उस को काफ़िर बना सकती है न मोमिन''

इसी तरह सय्यद सुलैमान नदवी साहिब ने मसीह की मौत के बारे में इमाम इबने हज़म का मत बयान करने के बाद लिखा है :

''इस से पता लगता है कि सर सय्यद मरहूम से पहले भी कुछ विद्धान इस समस्या में उनके ख़्याल रखने वाले गुज़रे हैं। और आजकल जो लोग इस समस्या को कुफ़्र और इस्लाम की कसौटी बना रहे हैं वह इस संदर्भ में अतिशयोक्ति से काम ले रहे हैं।''

(रिसाला मुआरिफ़ मार्च, 1920)

इसके अतिरिक्त मिस्र के विद्वानों में से अल्लामा रशीद रज़ा (भूतपूर्व मुफ़्तीए मिस्त्र व ऐडीटर रिसाला अलमनार) अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद अबदहू, अलउसताज़ महमूदुल शलतूत, अलउसताज़ अहमद अल अजूज़, अल उसताज़ मुसतुफ़ाउल मराग़ी, अलउसताज़ अबदुल करीमुल शरीफ़, अलउसताज़ अबदुल वहाबुल नज्जार, डा० अहिमद ज़कीअबू शावी सभी ने अपने फ़तवों व लेखों मे वफ़ाते मसीह को माना है। इसी तरह भारत-पाकिस्तान के विद्वानों में से हज़रत दाता गंज बख़्श अली हिजवेरी अलैहिर्रहम, मौलाना उबैदुल्लाह सिन्धी, नवाब आज़म यार जंग, मौलवी चिराग़ अली साहिब, सर सय्यद अहमद ख़ान साहिब, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, अल्लामा इक़बाल, अल्लामा मुहम्मद इनयातुल्लाह अलमशरिक़ी (बानी ख़ाकसार तहरीक) ग़ुलाम अहिमद परवेज़ (एडीटर मासिक तलूए इस्लाम) ने जमाअत अहमदिय्या के दृष्टिकोण का साथ दिया है। इस बारे में एक दिलचस्प बात यह भी है कि जमाअत इस्लामी के लीडर सय्यद अबुल आला मौदूदी को उपरोक्त विद्वानों व दार्शनिकों की तरह वफ़ाते मसीह की समस्या को मान लेने की हिम्मत तो न हुई लेकिन इस समस्या से बच निकलने के लिये उन्हों ने एक राजनीतिक चाल इस

प्रकार निकाली कि:

"पवित्र क़ुर्आन के अनुसार यदि कोई कार्यविधि उसके समान है तो वह केवल यही है कि रफ़ा जिसमानी (शरीर का आसमान पर उठाया जाना) से भी पूरी तरह बचा जाए और उन की मौत की व्याख्या करने से भी। बल्कि मसीह अलैहिस्सलाम के उठाए जाने को अल्लाह तआला की क़ुदरत का एक विशेष प्रदर्शन समझते हुए इसकी हालत को इसी प्रकार छोड़ दिया जाए जिस तरह स्वयं खुदा तआला ने छोड़ दिया है।"

(मौलाना मौदूदी पर एतराज़ात का इलमी जाएज़ा, लेखक मौलवी मुहम्मद यूसुफ़ भाग पहला पृष्ठ 169)

अत: एक प्रकार से मौदूदी साहिब ने भी वफ़ाते मसीह के तर्कों के सामने घुटने टेक ही दिये हैं। वरना सोचने वाली बात यह है कि जमाअत अहमय्दिया के बारे में ग़लत-फहिमयां फैलाने वाले चाहे कोई व्यक्ति हों या संस्थाएं, वह काल्पनिक मतभेदों को तो बढ़ा चढ़ा कर पेश करते हैं और जो वास्तविक विरोधात्मक समस्या है उसकी ओर संकेत देने की उनकी हिम्मत नहीं होती। और यह सबूत है इस बात का कि मसला (समस्या) हयाते मसीह के मैदान मे जमाअत अहमदिय्या एक महान विजय प्राप्त कर चुकी है। और हज़रत बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या की यह भविष्यवाणी बड़ी सफ़ाई से पूरी होती चली जा रही है कि:

"याद रखो कोई आसमान से नहीं उतरेगा हमारे सब विरोधी जो अब जीवित मौजूद हैं वह तमाम मरेंगे और कोई उन में से ईसा बिन मर्यम को आसमान से उतरते नहीं देखेगा। फिर उनकी औलाद (संतान) जो बाक़ी रहेगी वह भी मरेगी और उन में से भी कोई आदमी ईसा बिन मर्यम को आसमान से उतरते नहीं देखेगा। और फिर औलाद की औलाद मरेगी और वह भी मर्यम के बेटे को आसमान से उतरते नहीं देखेगी। तब ख़ुदा उनके दिलों में घबराहट डालेगा कि ज़माना सलीब का भी गुज़र गया और दुनिया दूसरे रंग में आ गई, पर मर्यम का बेटा ईसा अब तक आसमान से न उतरा तब बुद्धिजीवी एक साथ

इस मत से दु:खी हो जायेंगे और अभी तीसरी शताब्दी आज के दिन से पूरी नहीं होगी कि ईसा की प्रतीक्षा करने वाले क्या मुसलमान और क्या ईसाई घोर निराश और हताश हो कर इस झूठे अक़ीदे को छोड़ देंगे और दुनिया में एक ही धर्म होगा और एक ही पेशवा। मैं तो एक बीज बोने आया हूँ। सो मेरे हाथ से वह बीज बोया गया, अब वह बढ़ेगा और फूलेगा, और कोई नहीं जो उसको रोक सके।

(तज़करतुश्शहादतैन पृष्ठ 95)

मसीह का पुनरावतरण

अब समस्या हल करने वाली यह है कि जब यह साबित है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का देहान्त हो चुका है तो फिर उन के दोबारा आगमन के बारे में जो भविष्यवाणियां हैं उनका क्या स्थान है ?

इस बारे में कुछ नासमझ मुसलमान कह दिया करते हैं कि अब किसी महदी और मसीह की ज़रूरत नहीं है। न किसी ने आना था और ना आएगा। वास्तव में उनका यह दृष्टिकोण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार निराशा और बेज़ारी का नतीजा है। वरना मसीह व महदी के आगमन के बारे में भविष्यवाणियों और ख़बरों में इतना तो असर पाया जाता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ीअल्लाह अनहुम से ले कर आज तक मुसलमान हर युग में इस की प्रतीक्षा करते चले आ रहे हैं। यदि इसकी बुनियाद केवल झूठ पर होती तो यह प्रभाव न होता। वास्तविकता यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दोबारा आगमन से मतलब यह है कि उन का मसील आएगा। अर्थात उम्मते मुहम्मदिया ही का कोई व्यक्ति हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का रंग और उनके गुण ले कर प्रकट होने वाला था। जैसा कि कुछ पहले बुज़ुर्गों ने भी इस बात का प्रदर्शन किया है।

जैसा कि इमाम सिराजुद्दीन इबनुल वरदी ने मसीह के निश्चित रूप से आगमन की तसदीक़ के पश्चात एक दूसरे गिरोह का अक़ीदा इस प्रकार लिखा है अर्थात एक गिरोह ने नज़ूले ईसा (ईसा के दुनिया में

प्रकट होने) से एक ऐसे व्यक्ति का प्रकट होना समझा है जो फज़ल और सौभाग्य में ईसा अलैहिस्सलाम के जैसा होगा। जिस प्रकार उदाहरण देने के लिये नेक आदमी को फ़रिश्ता और उपद्रवी को शैतान कहते हैं। लेकिन इसका अर्थ फरिश्ता और शैतान नहीं होता।

(खरीदतुल अजाएब व फरीदा तुलररगालिब पृष्ठ 214 प्रकाशक अलतक़वीमुल इलमी मिस्र)

और हज़रत शेख़ अकबर मुहीउद्दीन इबन अरबी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी तफ़सीर अराएसुल बयान जिल्द 1 पृष्ट 262 में फ़र्माया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नजूल आख़री ज़माने में एक दूसरे बदन (वजूद) के साथ ज़रूरी है। (अनुवाद)

यही जमाअत अहमदिय्या का अक़ीदा और हज़रत बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या का दावा है जिस के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़ज़ल और सौभाग्य के आधार पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जैसे उनके स्थान पर और उनके बरूज़ (उनकी जगह पर उन जैसे) हैं। और बुख़ारी शरीफ़ की हदीस के मुताबिक इसी उम्मत में से हमारे इमाम हैं

ख़त्मे नबुव्वत की समस्या

सबसे बड़ी भ्रांति जो जमाअत अहमदिया के ख़िलाफ लिख कर तथा बोल कर फैलाई जा रही है वह यह है, जैसे कि हम अहमदी मुसलमान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खातमुन्नबीय्यीन नहीं मानते। सारे अहमदी इस बात के साक्षी हैं, यह हम सब पर एक बहुत बड़ा झूठा इल्ज़ाम है। हम ख़ुदा तआला को साक्षी मान कर यह घोषणा करते हैं कि हमारा धर्म इस्लाम है और हमारे अक़ीदे इस्लामी हैं। और कोई अक़ीदा हमारा अल्लाह तआला और उसके रसूल सय्यदना मुहम्मद मुसतुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा के विपरीत नहीं और हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ख़ातमुन्नबिय्यीन होने पर पूरे विश्वास और आस्था, विवेक एवं बुद्धि से ईमान रखते हैं। और जो आदमी आपको

ख़ातमुन्नबिय्यीन नहीं मानता वह हमारे नज़दीक मुसलमान ही नहीं है। और हमने यह ऐलान आज ही नहीं किया बल्कि जमाअत अहमदिय्या की नींव रखे जाने के दिन से ही हम यह अक़ीदा लिखित और मौखिक रूप से ज़ाहिर करते चले आ रहे हैं और स्वयं हज़रत बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या अलैहिस्सलाम ने अपनी किताबों में अपने आक़ा व मालिक सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमुन्नबीय्यीन होने पर अपना ईमान ज़ाहिर फ़रमाया है।

अत: आप इसी ख़ातमुन्नबीय्यीन के इन्कार के इल्ज़ाम को जो आज कल सांसारिक व राजनीतिक उद्देश्य से फैलाया जा रहा है इन शब्दों में रद्द फ़रमाते हैं।

"मुझे अल्ला जल्ला शानहू की क़सम है कि मैं काफ़िर नहीं, (لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ) मेरा अक़ीदा है। और (وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ) पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में मेरा ईमान है। मैं इस बयान की सच्चाई पर इतनी क़समें खाता हूँ जितने ख़ुदा तआला के पवित्र नाम हैं। और जितने क़ुर्आन करीम के अक्षर हैं और जितने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कमालात हैं। कोई अक़ीदा मेरा अल्लाह और रसूल के फ़रमान के विपरीत नहीं और जो कोई ऐसा ख़्याल करता है ख़ुद उसकी ग़लती है। और जो व्यक्ति मुझे अब भी काफ़िर समझता है और झुठलाने से रुकता नहीं वह याद रखे कि मरने के बाद अवश्य उससे पूछा जाएगा।"

(करामातुस्सादिक़ीन पृष्ठ 25)

अत: अहमदियों को ख़त्मे नबुव्वत का इन्कारी घोषित करना अत्याधिक अत्याचार है। और फिर मज़े की बात तो यह है कि हमारे साधारण मुसलमान भाई आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबीय्यीन मानने के बावजूद आख़री ज़माने में हज़रत ईसा नबीयुल्लाह के दोबारा आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं तो फिर ख़त्मे नबुव्वत कैसे बाक़ी रही। और वह क्यों ख़त्मे नबुव्वत के इन्कारी घोषित नहीं किये जाते। जबकि

क़ुर्आन मजीद में जहाँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन्नबिय्यीन घोषित किया गया है वहां कोई ऐसा स्पष्टीकरण नहीं है, जिस से यह पता चले कि अब केवल पुराना नबी आ सकता है और उम्मते मुहम्मदिया के किसी व्यक्ति को भी यह दर्जा (पदवी) नहीं मिल सकता।

अतः इसी बात को सामने रखते हुए मौलाना मुहम्मद उसमान साहिब फ़ारक़लीत ने जो हिन्दुस्तान के एक गौरवशाली पत्रकार थे शिक्षित वर्ग का प्रतिनिधत्व करते हुए फ़रमायाः

> "मज़े की बात यह है कि मिर्ज़ा साहिब क़ादियानी तो अपने आप को मसीहे मुहम्मदी कहें...........लेकिन हमारे विद्वान इसराईली और असली नबी को हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद दुनिया में लाएं और वे काफ़िर न घोषित हो सकें बल्कि मुसलमान तौ और ज़्यादा कफ़िर ठहरें। हे विद्वानों ! यदि आप क़ादियानी फ़ितना की जड़ काटना चाहते हैं तो पहले अपनी जड़ काटें।"
>
> *(शबिस्ताँ नवम्बर 1974)*

यही कारण है कि एक ओर अक़ीदा ख़त्मे नबुव्वत और दूसरी ओर अक़ीदा नुज़ूले मसीह (मसीह का आगमन) को देख कर इस्लाम के बड़े विद्वानों व बुज़र्गों को भी ख़त्मे नुबुव्वत की यह व्याख्या करनी पड़ी कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ख़त्मे नबुव्वत से यह मतलब है कि अब कोई ऐसा नबी नहीं आ सकता जो नई शरीयत लाए या जो शरीयते मुहम्मदिया को रद्द करने वाला हो। बल्कि जो भी नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आएगा वह आप का आज्ञाकारी शिष्य होगा और ऐसी नबुव्वत का नाम बुज़ुरगान ने "नबुव्वतुल वलायत" रखा है। और जमाअत अहमदिय्या का भी यही अक़ीदा है और हमारे विरोधी जो हमें ग़लत तरीक़े पर और ज़ुल्म करते हुए ख़त्मे नबुव्वत का मुन्किर (न मानने वाला) ठहराते हैं तो वे केवल आम मुसलमानों में अहमदियों के ख़िलाफ क्रोध और जोश फैलाने के लिये ऐसा इल्ज़ाम हम पर लगाते हैं। अब हम अपने विरोधियों से पूछते हैं कि

जब जमाअत अहमदिय्या 'ख़त्मे नबुव्वत' की वही व्याख्या करती है जो पुराने बुज़ुर्गों, विद्वानों ने की है तो क्या उन्होंने इस बात की हिम्मत की है या कर सकते हैं कि वह सारे पुराने बुज़ुर्गों पर भी कोई फ़तवा घोषित करें ? यह कैसा अजीब अँधेर है कि जो बात उनके माने हुए बड़े पथ-प्रदर्शक व पेश्वा करें तो वह मुस्लिम बल्कि इमामुल मुसलिमीन (मुसलमानों के इमाम), और वही बात हम कहें तो इस्लामी क्षेत्र से निकाले गये और मुरतद (धर्म बदलने वाला) और काफ़िर !

अब मैं केवल थोड़े से बुज़ुर्गान के प्रसंग इस बारे में आपके सामने रखता हूँ जो जमाअत अहमदिय्या के अक़ीदे का समर्थन करते हैं और जिन से पता चलता है कि 'ख़त्मे नबुव्वत' की जमाअते अहमदिया ने कोई नई व्याख्या नहीं की और न ही इस बारे में जमाअत अहमदिया के अक़ीदे आम मुसलमानों से अलग हैं।

(1)

हज़रत उम्मुल मोमिनीन आइशा सिद्दीका रज़ीअल्लाह अन्हा ने फ़रमाया है :

قُوْلُوْا اِنَّهٗ خَاتَمَ الْاَنْبِيَاءِ وَلَا تَقُوْلُوْا لَا نَبِيَّ بَعْدَهٗ (حدیث)

(दुर्रे मनसूर जिल्द 5 पृष्ठ 204 और तकमला मजमउल बहार जिल्द 4 पृष्ठ 85)

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को खातमुन्नबीय्यीन तो बेशक कहो लेकिन यह न कहो कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद नबी नहीं आ सकता।

(2)

हज़रत इमाम मुहम्मद ताहिर सिन्धी रहमतुल्लाह अलैह (मृत्यु हिजरी 976) जो एक महान विद्वान थे जिन्होंने हदीस के सात प्रमुख संग्रहों के लिए बहुत लाभदायक प्रसंग अरबी भाषा में लिखे और हदीस के शब्दकोष में एक बहुत लाभदायक व पूर्ण किताब दो जिल्दों और एक परिशिष्ट पर आधारित "मजमा बिहारुल अनवार" लिखी, हज़रत आयशा रज़ीअल्लाह

अन्हा के कथन का वर्णन करने के बाद फ़रमाते हैं :

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ीअल्लाह अन्हा का यह फ़रमान नबीयुल्लाह के आगमन को सम्मुख रख कर फ़रमाया गया है। और हदीस अर्थात 'मेरे बाद कोई नबी नहीं' के विपरीत नहीं। क्योंकि इस हदीस का मतलब यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात ऐसा नबी न होगा जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शरीयत को रद्द कर दे। (अनुवाद) *(तकमला पृष्ठ 85)*

(3)

हज़रत इमाम मुल्ला अललक़ादरी रहमतुल्लाह अलैह (मृत्यु 1014 हिजरी) जो बड़े खोजी और फ़िका (धर्म-शास्त्र) हनफ़िया के कुशल और महान इमाम गुज़रे हैं अपनी किताब 'मौज़ूआते कबीर' में 'इब्ने माजा' जिल्द प्रथम 'किताबुल जनाइज़' पृष्ठ 237 में वर्णित आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस:

لَوْعَاشَ إِبْرَاهِيْمُ لَكَانَ صِدِّيْقًا نَبِيًّا

पर बहस करते हुए लिखते हैं कि यदि आप के सुपुत्र इबराहीम रज़ीअल्लाह जीवित रहते और नबी बन जाते, इसी प्रकार यदि हज़रत उमर नबी बन जाते तो वह आपके आज्ञाकारियों में से होते। इस बयान के पश्चात ख़ातमुन्नबीय्यीन की यह व्याख्या फ़रमाते हैं कि:

ख़ातमुन्नबिय्यीन का यह अर्थ है कि आप के बाद कोई ऐसा नबी नहीं हो सकता जो आप की उम्मत से न हो और आपकी शरीयत को रद्द करे। जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद ऐसे नबी का आना जो आप का आज्ञाकारी और उम्मती हो और आपकी शरीयत का अनुयायी हो आपके ख़ातमुन्नबीय्यीन होने के विपरीत और अवरुद्ध नहीं है। (अनुवाद) *(मौज़ूआते कबीर पृष्ठ 58, 59)*

(4)

हज़रत शेख अकबर मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी अलैहिर्रहमत हदीस 'ला

नबिय्या बादी' की व्याख्या में फ़रमाते हैं कि:

"नबुव्वत पूर्णतया बन्द नहीं हुई । इस लिये कहा हम ने केवल शरीयत वाली नबुव्वत बन्द हुई है अतः 'ला नबिय्या बादी' का यही अर्थ है । और लिखते है कि :" (अनुवाद) *(फ़तूहाते मक्किया जिल्द 2 पृष्ठ 24)*

वह नबुव्वत जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आने से समाप्त हुई है वह केवल शरीयत वाली नबुव्वत है न कि नबुव्वत का पद बस अब कोई शरीयत न होगी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शरीयत को रद्द करने वाली हो और न आपकी शरीयत में कोई नया हुकम बढ़ाने वाली शरीयत होगी । और यही अर्थ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस फ़रमान के हैं कि नबुव्वत समाप्त हो गई है । बस मेरे बाद न कोई रसूल होगा न नबी । अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के इस फ़रमान का मतलब यह है कि अब ऐसा नबी कोई नहीं होगा जो मेरी शरीयत के विपरीत शरीयत लाए । बल्कि जब कभी कोई नबी होगा तो वह मेरी शरीयत के हुक्म के अधीन होगा ।" (अनुवाद)

(फतूहार्त मक्किया जिल्द 2 पृष्ठ 3)

(5)

इसी प्रकार हज़रत शाह वलीउल्लाह साहिब मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह (मृत्यु 1176 हिजरी) जो बारहवीं शताब्दी के मुजद्दिद भी माने गये हैं फ़रमाते है :

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नबियों के अन्तिम होने से यह मतलब है कि आपके पश्चात ऐसा कोई नबी ख़ुदा की ओर से नहीं हो सकता जिसे ख़ुदा कोई नई शरियत दे कर नियुक्त करे ।" (अनुवाद)

(तफ़हीमाते इलाहिया-तफ़हीम न॰ 53)

(6)

इसी प्रकार हदीस 'ला नबिय्या बादी' के अर्थ इमाम अल्लामा असय्यद मुहम्मद बिन अब्दुर्रसूल अलहुसैनी अलबर जंजी अल शहिर ज़ोरी सुम्मल मदनी (मृत्यु 1123 हिज़री) ने जिनकी गिनती कुछ ने

मुजद्दीन में भी की है, अपनी किताब 'अल इशाअतो फ़ी असरातिस्साअते पृष्ठ 226 में इमाम मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैह यह लिखते हैं:

यह हदीस कि 'मेरे बाद आकाशवाणी नहीं', झूठ और बे बुनियाद है। हां 'ला नबिय्या बादी' आया है। जिसके अर्थ विद्वानों ने यह किये हैं कि आपके बाद कोई नबी पैदा न होगा जो आप की शरीयत को रद्द करने वाला हो। जैसा कि 'ला नबिय्या बादी' के अर्थ, कि 'मेरे बाद किसी भी प्रकार का कोई अवतार नहीं आएगा' विद्वान नहीं करते। (अनुवाद)

(7)

मौलवी अब्दुल हई साहिब फ़िरंगी महल लखनवी फ़रमाते हैं:

''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद किसी नबी का आना मुश्किल नहीं। बल्कि नई शरीयत वाला बेशक बिल्कुल बंद है।''

(दाफ़िउल वसावत फ़ी असर इब्ने अब्बास नया एडीशन 16)

(8)

इसी प्रकार मुहम्मद क़ासिम साहिब रहमतुल्लाह नानूतवी संस्थापक मदरसा देवबन्द लिखते हैं:

''जनता के विचार में तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ख़ातम होने के यह अर्थ हैं कि आप का ज़माना पिछले अवतारों के ज़माने के बाद और आप सब में आख़री नबी हैं। किन्तु बुद्धिमानों पर साबित होगा कि पहले आने और बाद में आने का कुछ महत्व नहीं। फिर प्रशंसा के प्रसंग में यह फ़रमाना कि :

लेकिन वे अल्लाह के रसूल और खातमुन्नबीय्यीन हैं)

(तहज़ीरुन्नास पृष्ठ 3)

किस प्रकार ठीक हो सकता है।

और इसी किताब के पृष्ठ 28 पर लिखते हैं:

''यदि कल्पना करें कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

ज़माना के बाद भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी 'ख़ातमियते मुहम्मदी' में कुछ अन्तर न आएगा।"

माननीय सज्जनों ! हमारे विरोधी मौलवियों की ओर से हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम के अवतार होने के दावे के ख़िलाफ साधारणतया आयत 'ख़ातमुन्नबीय्यीन' और हदीस 'ला नबिय्या बादी' प्रस्तुत करके जनता को ग़लत रास्ते पर डाल कर इन्हें अहमदिय्यत के विरुद्ध भड़काया जाता है। किन्तु उपरोक्त प्रसंगों से यह बात सपष्ट हो चुकी है कि इन का अर्थ केवल यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अब कोई ऐसा नबी नहीं आ सकता जो नयी शरीयत वाला नबी हो। और ऐसा ग़ैर शरई नबी भी नहीं आ सकता जिसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी न की हो। बल्कि सारी उम्मते मुहम्मदिया एक ऐसे नबी के आगमन पर सहमत है, जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आज्ञाकारी होगा अर्थात मसीह मौऊद। और यही आस्था जमाअत अहमदिय्या की है। और यही दावा बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या अलैहिस्सलाम का है। और जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ कि जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु क़ुर्आन व हदीस और इतिहास से साबित है तो पता लगा कि आने वाला मौऊद इसी उम्मत का व्यक्ति है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ग़ुलाम और सेवक है। इसी लिये हज़रत बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या फ़रमाते हैं:

"अल्लाह एक है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके नबी हैं। और वह ख़ातमुल अम्बया हैं। और सबसे बढ़ कर हैं। अब इसके बाद और कोई नबी नहीं, मगर वही, जिस पर मुहम्मदियत की चादर पहनाई गई। क्योंकि सेवक अपने स्वामी से जुदा नहीं और न शाख़ा अपने तने से अलग है। बस जो पूर्णतया आक़ा (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) में लीन हो कर भगवान से अवतार की उपाधि पाता है वह 'ख़त्मे नबुव्वत' में रुकावट डालने वाला नहीं। जैसा कि जब तुम दर्पण में अपना रूप देखो तो तुम दो नहीं हो सकते

बल्कि एक ही हो। यद्यपि देखने में दो दिखाई देते हैं। केवल छाया और असल का अन्तर है। बस ऐसा ही भगवान ने मसीहे मौऊद में चाहा।''

(किश्ती नूह पृष्ठ 15)

बस 'ख़त्मे नबुव्वत' के मत पर वास्तविक रूप से हमारा और दूसरे मुसलमान भाईयों का कोई विरोध नहीं है। यदि विरोध है तो केवल मसीहे मौऊद के व्यक्तित्व के और इस के निश्चित होने में है। क्योंकि हम यह कहते हैं कि वह मसीहे मौऊद आ गया है और वह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम हैं। और दूसरे मुसलमान अभी मसीहे इस्राईली की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिसको क़ुर्आन मजीद नें

وَرَسُوْلًا اِلٰی بَنِیْٓ اِسْرَآئِیْلَ (آل عمران: ۵۰)

(और इस्राईल की सन्तान की ओर रसूल बना कर भेजेगा)

(सूरत आले इमरान: आयत 50)

कह कर केवल बनी इसराईल का नबी नियुक्त किया है न कि उम्मत मुहम्मदिया का। अख़बार ''सिदक़े जदीद'' लखनऊ 6 अगस्त 1965 में भी इस आस्था की इस प्रकार तुलना की गई है कि:

''ये क़ादियानी और उनके विरोधी दोनों नियमित रूप से एक ही आस्था रखते हैं। विरोध केवल व्यक्तित्व में है। विरोधी कहते हैं कि चाहे हज़रत मसीह नबुव्वत की हालत में तशरीफ़ लाएंगे और उन पर आकाशवाणी भी उतरेगी। आकाशवाणी लाने वाले हज़रत जिब्राईल होंगे। किन्तु आने वाले मसीह ग़ुलाम अहमद क़ादियानी नहीं हैं। वे तो आयेंगे। अर्थात यह अन्तर है कि ईसा नबीउल्लाह तशरीफ़ ले आए हैं। विरोधी कहते हैं कि नहीं वह अभी नहीं आए परन्तु आएंगे ज़रुर। फिर क़ादियानियों और उनके विरोधी मौलवियों में अन्तर क्या रहा। सिद्धांतों पर दोनों सहमत हैं। झगड़े का कारण केवल व्यक्तित्व है।''

मसीहे मौऊद का दावा-ए-नबुव्वत

सज्जनों ! हमारे मुसलमान भाइयों को ये मौलवी इस बड़ी भ्रान्ति में डाल देते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाबले पर दावा नबुव्वत करके एक अलग उम्मत की बुनियाद ड़ाल दी है। इस लिये वह इस्लामी क्षेत्र से बाहर हैं। लेकिन यह खुला झूठ है। जैसा कि मैं अपने भाषण के आरम्भ में ब्यान कर चुका हूँ। अब यहाँ केवल व्याख्या के लिये हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की कृतियों से कुछ अंश पेश करुँगा कि आप ने किस प्रकार की नबुव्वत का दावा फ़रमाया है।

(क)

आप अपनी किताब 'ततिम्मा हक़ीक़तुल वही' के पृष्ठ 68 पर लिखतें हैं :

> ''मेरा अर्थ नबुव्वत से यह नहीं कि मैं नऊज़ुबिल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाबले पर खड़ा हो कर नबुव्वत का दावा करता हूँ या कोई नई शरीयत लाया हूँ। केवल मेरा मतलब मेरी नबुव्वत का खुदा तआला से सम्बन्ध और उस से बातें करना है, जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी से मिला है। बस मुकालमा मुख़ातबा को आप लोग भी मानते हैं। बस यह केवल शब्दों की ग़लती हुई अर्थात आप लोग जिस बात का नाम 'मुकालमा मुख़ातबा' रखते हैं मैं इस की अधिकता का नाम अल्लाह के हुकम से नबुव्वत रखता हूँ।''

(ख)

इसी प्रकार आपने अपने अन्तिम पत्र में जो ''अख़बार आम'' लाहौर 26 मई 1908 में छपा है लिखा कि:

> ''यह इलज़ाम जो मेरे ऊपर लगाया जाता है कि जैसे मैं ऐसी नबुव्वत

का दावा करता हूँ जिस से मेरा इस्लाम से कोई सम्बन्ध बाकी नहीं रहता। और जिस का यह अर्थ है कि मैं असाधारण रूप से अपने आपको ऐसा नबी समझता हूँ कि क़ुर्आन शरीफ़ की पैरवी की कुछ ज़रूरत नहीं रखता, और अपना अलग किबला बनाता हूँ और शरीयते इस्लाम को रद्द घोषित करता हूँ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी और आज्ञाकारिता से बाहर जाता हूँ, यह इलज़ाम ठीक नहीं है। बल्कि ऐसा दावा मेरे समक्ष कुफ्र है। और न आज से बल्कि अपनी हर एक किताब में सदा मैं यही लिखता आया हूँ कि इस प्रकार की नबुव्वत का मुझे कोई दावा नहीं। यह पूर्णतया मुझ पर इल्ज़ाम है। और जिस आधार पर मैं अपने आप को नबी कहलाता हूँ वह केवल इतना है कि मैं सौभाग्यवश भगवान के साथ बातें करता हूँ। वह मेरे साथ बहुत बार बोलता और मेरी बातों का उत्तर देता है। और बहुत सी परोक्ष बातें मुझ पर प्रकट करता है। और भविष्य के रहसय मुझ पर खोलता है। और इन बातों की अधिकता के कारण ही उसने मेरा नाम 'नबी' रखा। अत: मैं भगवान के हुकम के अनुसार नबी हूँ। यदि मैं इस से इन्कार करूँ तो यह मेरा पाप होगा।''

इनी से सप्ष्ट है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हर पग पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लभ की पैरवी और ग़ुलामी का दम भरा है। और स्वयं को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सेवकों का सेवक ही समझा है। और आप के हृदय में और आपकी जमाअत के हृदय में 'इशक़े मुहम्मद' इतना रचा बसा हुआ है कि हमारे शरीर की एक एक रग और एक एक कण यही पुकार रहा है कि:

''बाद अज़ ख़ुदा बइशक़े मुहम्मद मुख़म्मरम
गर कुफ़्र ई बवद बख़ुदा सख़्त काफिरम।''

(कलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहि इस्लाम)

अर्थात: ख़ुदा तआला के बाद मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इश्क में सरशार हूँ। ख़ुदा की कसम यदि यह कुफ्र है तो फिर सब

से बड़ा काफ़िर मैं हूँ।

जिहाद को रद्द करने का इल्ज़ाम

जमाअत अहमदिय्या के विरुद्ध एक बड़ी भ्राँति यह भी फैलाई जाती है कि यह जमाअत जिहाद का इनकार करती है। जबकि यह बात भी सरासर झूठ और हक़ीक़त के विपरीत है। क्योंकि क़ुर्आन के हुकमों और हदीसों के संदर्भ में हर मुसलमान पर जिहाद ज़रूरी है। हां जिहाद से केवल धर्म के लिये युद्ध समझना इस्लाम की शिक्षा को न जानने का नतीजा है। जैसा कि साधारण मुसलमान समझते हैं। जिहाद की जो व्याख्याएं बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या ने फ़रमाई हैं उन का सार इस्लामी शिक्षा के संदर्भ में यह है कि जिहाद तीन प्रकार के हैं।

पहला : 'जिहादे अकबर' अर्थात अपने मन से जिहाद करना। जैसा कि हदीस शरीफ़ में आता है कि:

رَجَعْنَا مِنَ الْجِهَادِ الْاَصْغَرِ اِلَى الْجِهَادِ الْاَكْبَرِ (تفسير كشاف)

"एक युद्ध से वापस लौटने पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि हम छोटे जिहाद से लौट कर बड़े जिहाद की ओर आ गये हैं।"

(तफ़सीर कशाफ)

दूसरा : दूसरी प्रकार का जिहाद, 'जिहादे कबीर' है अर्थात शैतानी शिक्षा के विरुद्ध इस्लामी शिक्षा का प्रचार करना जैसा कि खुदा तआला ने फ़रमाया:

وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا

(अलफ़ुर्क़ान 53)

अर्थात : तू इन्कार करने वालें की बात न मान और इस (कुर्आन) के द्वारा उन से बड़ा जिहाद कर।

तीसरा : जिहाद 'जिहादे असगर' है। अर्थात शत्रु को हटाने के लिये

तलवार उठाना तथा शक्ति का प्रयोग करना। जैसा कि क़ुर्आन मजीद में आता है

أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقَاتَلُوْنَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوْا وَإِنَّ اللّٰهَ
عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرٌ (الحج : ٤٠)

अर्थात : और वे लोग जिन से अकारण युद्ध किया जा रहा है उन्हें भी (अपने बचाव के लिए युद्ध करने की अनुमति दी जाती है, क्योंकि उन पर अत्याचार किया गया है और अल्लाह उनकी सहायता करने का सामर्थ्य रखता है। *(अलहज: 40)*

वास्तविकता यह है कि जमाअत अहमदिय्या न केवल जिहाद को मानती है बल्कि 'जिहाद अकबर' और 'जिहादे कबीर' अपने कामों से कर के दिखा रही है। जबकि हमारे विरोधी केवल जिहाद के नारे लगाना ही जानते हैं। जिहाद के बारे में जमाअत अहमदिय्या का यह अक़ीदा है कि इस ज़माने में क्योंकि शान्ति स्थापित हो गई है और धर्म के हुक्मों को पूरा करने में कोई रोक नहीं और इस्लाम के शत्रु तलवार की बजाए कलम द्वारा आक्रमण कर रहे हैं, इसलिये हमें भी धर्म के लिये शक्ति का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं बल्कि शान्ति के तरीक़ों से क़ुर्आन की शिक्षा के अनुसार क़लम से जिहाद करना चाहिये। अतैव हज़रत बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या फ़रमाते हैं:

> ''हाँ, इतना हम अवश्य कहेंगे कि ये दिन धर्म के पक्ष में लड़ाई के दिन नहीं हैं। क्योंकि हमारे विरोधियों ने भी कोई हमला अपने दीन के प्रचार में तलवार और बंदूक से नहीं किया बल्कि भाषण और क़लम और काग़ज़ से किया है। इस लिये ज़रुरी है कि हमारे हमले भी भाषण और लेखों तक ही सीमित रहें। जैसा कि इस्लाम ने अपने आरम्भिक काल में किसी क़ौम पर तलवार से हमला नहीं किया, जब तक पहले उस क़ौम ने तलवार न उठाई। अत: इस समय धर्म के समर्थन में तलवार उठाना न केवल अन्याय है बल्कि इस बात को प्रकट करना है, कि हम लिखित व मौखिक रूप से और

स्पष्ट दलीलों द्वारा दुश्मन को मुलज़िम करने में कमज़ोर हैं।"

(अय्यामुस्सुलाह पृष्ठ 51)

इसी तरह आप फ़रमाते हैं :

अब छोड़ दो जिहाद का ऐ दोस्तो ख़्याल,
दीं के लिये हराम है अब जंग और क़िताल।
फ़रमा चुका है सय्यदे क़ौनैन मुस्तुफ़ा,
ईसा मसीह जंगों का कर देगा इलतवा।
यह हुकम सुन के भी जो लड़ाई को जाएगा,
वह काफ़िरों से सख़्त हज़ीमत उठाएगा।

(ज़मीमा तुहफ़ा गोलड़विया पृष्ठ 26)

हुज़ूर के इस पद्यांश में शब्द 'अब' और 'इलतवा' ध्यान देने योग्य हैं और जमाअत अहमदिय्या की आस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं कि अब इस युग में दीनी लड़ाईयों का न तो अवसर है और न ही ज़रूरत। इस लिये धर्मयुद्ध स्थगित होगा। और यह हुक्म हज़रत मिर्ज़ा साहिब का नहीं बल्कि स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लभ का, है। जैसा कि 'सही बुख़ारी' की एक रिवायत में 'यज़उल हरब' के शब्द संकलित हैं कि मसीह मौऊद धर्म युद्धों को समाप्त कर देगा। हाँ यदि किसी समय और किसी युग में इस्लाम के शत्रु बल पूर्वक इस्लाम को मिटाने की कोशिश करेंगे तो इस जिहाद में भी इन्शाल्लाह अहमदी सबसे आगे होंगे। और हमारे विरोधी देखेंगे कि वह जितना अपने जीवन और धन दौलत से प्यार करते हैं उस से बढ़ कर अहमदी मौत से प्यार करता है। इस लिये कि मृत्यु जीवन का अन्त नहीं बल्कि अमर जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ है।

लेकिन भाइयो! जमाअत अहमदिय्या एक शान्ति प्रिय और अमन पसंद जमाअत है। इसकी यह आस्था है कि इस्लाम न प्राथमिक युग में तलवार के ज़ोर से फैला है और न आगे उसे फैलने के लिये बल और हथियार की आवश्यकता है, बल्कि जिस प्रकार प्राथमिक युग में उसने

लोगों के दिलों को जीता था। उसी प्रकार वर्तमान युग में भी हम संसार के सारे लोगों के दिलों को जीत कर इस्लाम को विजयी करेंगे।

अंग्रेज़ी सरकार और जिहाद (धर्मयुद्ध)

सज्जनों! जिहाद के बारे में जमाअत अहमदिय्या के मत को देख कर ऐसे मौलवी जो हर बात को कूटनीति की दृष्टि से देखने के आदी हैं जमाअत अहमदिय्या के विरोध में यह भ्राँति भी फैलाते रहते हैं कि यह जमाअत अंग्रेजों का लगाया हुआ पौधा और सामराज्यवादी शक्तियों के लिये काम करने का साधन है, जबकि जमाअत अहमदिय्या पूर्ण रूप से एक धार्मिक जमाअत है। इसका राजनीति से कोई सम्बंध नहीं। इस जमाअत को, इस्लाम को नव जीवन प्रदान करने और विजयी करने के लिये, ख़ुदा ने अपने हाथ से स्थापित किया है। ऐसा आरोप लगाने वालों को शायद जमाअत अहमदिय्या के निर्मल दर्पण में अपना ही कुरूप चेहरा दिखाई पड़ता है अन्यथा वास्तविकता यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अंग्रेजों के विरुद्ध तलवार से जिहाद करने से इस लिये रोका था कि वर्तमान युग में स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान के अनुसार धर्म-युद्धों की आवश्यकता ही बाकी न रही थी, जैसा कि मैं अभी बता चुका हूँ। और यदि यह बात सही न थी और इस्लाम की आत्मा के विरुद्ध थी तो फिर हमारे विरोधी मौलवी बताएं कि सौ वर्षीय इस दौर में उन्हों ने कितने तलवार के जिहाद के कारनामे किये। उन्होंने क्यों अंग्रेजों के विरुद्ध जिहाद नहीं किया? और क्यों हर वर्ग के विद्वानों ने अंग्रेजों से जिहाद जाइज़ न होने का 'फ़तवा' दिया था? बस हमारे विरोधी ही अपने फ़तवों और कार्य रूप से सामराज्यवादी शक्तियों का काम करने वाले साबित होते हैं। इस सम्बंध में कुछ रोचक 'हवाले' आपके सामने प्रस्तुत हैं:

बरेलवी साहिबानः बरेलवी साहिबान के बारे में शोरिश काशमीरी, एडीटर 'चट्टान' ने लिखाः

"अंग्रेज़ों को तत्कालीन अधिकारी घोषित किया। और फ़तवा दिया कि हिन्दुस्तान 'दारुल इस्लाम' है। अंग्रेजों का यह स्वयं लगाया हुआ पौधा कुछ दिनों के पश्चात एक धार्मिक आंदोलन बन गया"

(चट्टान लाहौर 15 अक्तूबर 1962)

नजदिय्यत का पौधा: अहले हदीस के बारे में 'तूफ़ान' मुलतान के संपादक लिखते हैं:

"अंग्रेज़ों ने बड़ी होशियारी और चालाकी से 'तहरीके नजदिय्यत' का पौधा हिन्दुस्तान में भी लगाया और अपने हाथ से ही परवान चढ़ाया।"

(तूफ़ान 7 नवम्बर 1962)

'नदवतुल उलमा' लखनऊ: दारुलउलूम नदवतुल उलमा के रिसाले 'अल् नदवह' लखनऊ ने अपने प्रकाशन 5 जुलाई 1908 में लिखा:

"इस (दारुल उलूम) का असल उद्देश्य विवेकशील विद्वानों का पैदा करना है और इस प्रकार के 'उलमा' का एक ज़रूरी कर्तव्य यह भी है कि सरकार की बरकतों की जानकारी रखें और देश में सरकार की वफ़ादारी के ख़्यालात फैलाएं।"

मुफ़तियाने मक्का मुअज़्ज़मा: 'शोरिश काश्मीरी' संपादक 'चट्टान' ने अपनी एक किताब 'सय्यद अताउल्लाह शाह बुख़ारी" के पृष्ठ 131 में लिखा है कि:

"जमालुद्दीन इब्न अब्दुल्लाह शेख़ उमर हन्फ़ी मुफ़्ती मक्का मुअज़्ज़मा' अहमद बिन ज़िहनी शाफ़ई मुफ़्ती मक्का मुअज़्ज़मा' और हुसैन बिन इब्राहीम मालिकी मुफ़्ती मक्का से भी फ़तवे प्राप्त किये गये। जिनमें हिन्दुस्तान के दारुलइस्लाम होने की घोषणा की गई थी।"

शीय्या सिद्धान्त: शीय्या मुजतहिद अललहाइरी कहते हैं:

"हमको ऐसी हकूमत के अधीन होने का गर्व प्राप्त है कि जिस हकूमत में न्याय प्रियता और धार्मिक स्वतंत्रता क़ानून बन चुकी है। जिस

का उदाहरण दुनिया की किसी और हकूमत में नहीं मिल सकता। इस लिये मैं कहता हूँ कि हर शीय्या को इस उपकार के बदले में खुले दिल से ब्रिटिश गवरनमैंट का कृतज्ञ और धन्यावादी होना चाहिये।

(मौइज़ा तहरीके क़ुर्आन अप्रैल 1923 पृष्ठ 67-68)

सज्जनो! यहाँ इस कथन की व्याख्या भी आवश्यक है कि हमारे विरोधी मौलवी लोगों को यह कह कर भी जमाअत अहमदिय्या के प्रति दुर्भावना ग्रस्त करने की कोशिश करते हैं कि मिर्ज़ा साहिब को अंग्रेज़ी हकूमत से सांसारिक लाभ प्राप्त होते थे उनको गवरनमैंट की ओर से वेतन मिलता था इसी लिये उन्होंने जिहाद को अवैध घोषित किया, जबकि यह भी एक इल्ज़ाम है। इसी लिये हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि:

"ऐसी सरकार जो वास्तविकता में उपकार करने वाली और मुसलमानों के ख़ून और इज़्ज़त की रक्षा करने वाली है इसकी सच्ची आज्ञापालना की जाए, मैं सरकार से इन बातों द्वारा कोई पुरस्कार नहीं चाहता, मैं इस से प्रार्थना नहीं करता कि इस भलाई के बदले मेरा कोई लड़का किसी उच्च पदवी पर हो जाए.......तुम ख़ुदा से डरो और झूठे इल्ज़ाम मत लगाओ"

(इश्तिहार तिथि 21 अक्तूबर 1899 तबलीग़े रिसालत जिल्द 436)

ऐसी स्थिति में हम यह समझने में ग़लत नहीं हैं और परिस्थितियां भी हमारा स्मर्थन करती हैं कि हमारे विरोधी उलमा जो दिल में तो अंग्रेजों से जिहाद को कर्त्तव्य समझते थे परन्तु करते नहीं थे, वे सांसारिक लाभों के लिये ही जिहाद न करने के फ़तवे लिखते थे, क्योंकि उन में से किसी ने भी पिछले सौ वर्षों में अंग्रेजों के विरुद्ध तलवार से जिहाद नहीं किया।

कुछ वर्ष पहले अख़बारों में उनके छुपे हुए रहस्यों से परदा उठाया गया है वह मैं आपकी रुचि के लिये प्रस्तुत करता हूँ।

जैसे कि साप्ताहिक समाचार पत्र "सवादे आज़म" लाहौर ने अपनी

पत्रिका तिथि 7 नवम्बर 1962 में मौलवी शब्बीर अहमद साहिब उसमानी के हवाले से कुछ लोगों के बयान पर यह भेद खोला कि:

"मौलाना अशरफ़ अली थानवी (देवबन्दी) को छः सौ रुपये मासिक अंग्रेज़ सरकार की ओर से दिये जाते थे।"

इसी प्रकार समाचार पत्र 'तूफ़ान' मुलतान ने 7 नवम्बर 1962 के अंक में ये दो भेद खोले हैं कि:

1. "कलकत्ता में 'जमीअतुल उलमाए इस्लाम' सरकार की आर्थिक सहायता और उसकी इच्छा से स्थापित हुई है।

2. मौलाना इलयास साहिब के प्रचार आन्दोलन को भी आरम्भ में सरकार की ओर से हाजी रशीद अहमद द्वारा कुछ रुपये मिलते थे।"

इसी प्रकार प्रसिद्ध यही है कि 'मजलिसे अहरार' ने जब मस्जिद शहीद गंज' की समस्या में सारे मुसलमानों का विरोध किया और अंग्रेज़ सरकार से गठ-जोड़ किया तो वह बिना बदले के नहीं किया था।

परन्तु हम सारी दुनिया को चुनौती देते हैं कि कोई इस बात का प्रमाण दे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने या जमाअत अहमदिय्या ने कभी अंग्रेज़ सरकार की जाइज़ प्रशंसा और उनसे जिहाद अर्थात् धार्मिक विरोधों के कारण लड़ाई करने से मना करने के बदले में कोई रुपया, वेतन या और कोई सांसारिक लाभ लिया हो।

इमाम जमाअत अहमदिय्या की चुनौती

1935 में जब 'अहरार' का अंग्रेज़ी अफसरों से चोली दामन का साथ था। और पंजाब सरकार, गवर्नर और उच्च अधिकारियों सहित, जमाअत अहमदिय्या के विरोध पर तुली हुई थी हज़रत इमाम जमाअत अहमदिय्या मिर्ज़ा बशीरुददीन महमूद अहमद साहिब (दूसरे खलीफ़ा) ने इन शब्दों में अंग्रेज़ सरकार को चुनौती दी थी :

'जब तक मनुष्य किसी को अपना मित्र समझता है उस समय तक यदि कोई भेद उसका जानता हो तो वह उसको प्रकट नहीं करता

बल्कि उसे छुपाता है और यह कहता है कि मेरा मित्र है। लेकिन सरकार का सलूक बता रहा है कि वह हमें अपने मित्रों में से नहीं बल्कि विरोधियों में से समझती है। ऐसे समय पर मैं सरकार को लगातार चुनौती दे चुका हूँ कि वह साबित करे कि हमने कभी उससे कोई लाभ उठाया हो जो प्रजा के साधारण अधिकारों के अतिरिक्त हो। यदि हमने इसकी सेवा करके कोई सांसारिक लाभ प्राप्त किया है तो अब उसका कर्त्तव्य है कि वह उसे दुनिया के सामने प्रस्तुत करके हमें लोगों में शर्मिंदा करे............विरोधी कहते हैं कि अहमदियों के ख़ज़ाने सरकार भरती है। यदि यह बात सच है तो अब सरकार के लिये बहुत अच्छा अवसर है। वह ऐलान कर दे कि उस अवसर पर हमने अहमदिय्यों को इतने रुपये दिये थे।"

(अख़बार अलफ़ज़ल 6 अगस्त, 1935)

सज्जनो ! जमाअत पर इस प्रकार का इल्ज़ाम केवल बीते युग की बात नहीं है बल्कि आज के समय में भी हम पर यह इल्ज़ाम लगाया जाता है, लगाया जा रहा है, कि अहमदी यहूदियों के ऐजेंट हैं। और यह जमाअत यहूदियों के रुपये से चल रही है। जबकि इस गंदे और झूठे इल्ज़ाम में ज़रा भी सच्चाई नहीं है। और अभी मैंने जो हवाले प्रस्तुत किये हैं उन के संदर्भ में इस प्रकार के विरोधियों और जलने वालों से मैं यही कहूँगा कि

आप ही अपनी अदाओं पें ज़रा ग़ौर करें,
हम अगर अर्ज़ करेंगे तो शिकायात होगी ।।

जमाअत अहमदिय्या और संस्थापक जमाअत अहमदिय्या, को जो लोग साम्राज्यवादी शक्तियों का कार्यकर्ता सिद्ध करने की कोशिश करते हैं वह स्वयं अपने अस्तित्व में झांक कर देखें तो उन्हें पता लगेगा कि जमाअत अहमदिय्या के मुक़ाबले पर उनका अपना चरित्र कितना दाग़दार है। लेकिन जमाअत अहमदिय्या ख़ुदा के फ़ज़ल से बेदाग़ है। अब भी हम ऐसे इल्ज़ाम लगाने वालों को चुनौती देते हैं कि वह साबित करें कि जमाअत अहमदिय्या

को कोई सरकार या कोई देश, किसी प्रकार की आर्थिक सहायता दे रहा हो। बल्कि वास्तविकता यह है कि जमाअत अहमदिय्या ख़ुदा तआला की स्थापित की हुई जमाअत है और ख़ुदा की सहायता और मदद से ही यह जमाअत दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करती चली जा रही है और भ्रांतियाँ फैलाने वाले विरोधी और जलने वाले, असफल होते चले जा रहे हैं। हज़रत बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं:

> ''दुनिया मुझको नहीं पहचानती पर वह मुझको जानता है जिसने मुझे भेजा है। यह उन लोगों की ग़लती और दुर्भाग्य है कि वे मेरी तबाही चाहते हैं। मैं वह वृक्ष हूँ जिसको सच्चे मालिक ने अपने हाथ से लगाया है। हे लोगो! यक़ीन से समझ लो कि मेरे साथ वह हाथ है जो अन्त तक मेरे साथ वफ़ा करेगा।''

(ज़मीमा तोहफ़ा गोलड़विया पृष्ठ 13 प्रकाशित 1902)

तकफ़ीरे मुन्करीन की समस्या

सज्जनो! एक आरोप आजकल जमाअत अहमदिय्या पर यह भी लगाया जाता है कि अहमदी, हज़रत मिर्ज़ा साहिब का इन्कार करने वालों को काफ़िर कहते हैं। उनको नमाज़ का इमाम नहीं बनाते। उनके जनाज़े नहीं पढ़ते उनसे निकाह नहीं करते। जबकि यह आरोप जितना हास्यप्रद है उससे कहीं बढ़ कर दुःख दायी भी है क्योंकि जब हज़रत मिर्ज़ा साहिब क़ादियानी बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या ने वफ़ाते मसीह ऐलान किया और अपने मसीह मौऊद होने का दावा फ़र्माया तो उस समय दो सौ से अधिक मौलवियों ने आपको और आपकी जमाअत को काफ़िर घोषित किया और ये फ़तवे दिये कि इन लोगों को मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़न नहीं करना चाहिये। इन के पीछे नमाज़ पढ़ना हराम है। यदि ये मस्जिद में जाएं तो मस्जिद पलीद (अपवित्र) हो जाएगी। इनका माल चुराना जायज़ है। ये 'वाजबुल क़त्ल' हैं, आदि। कुफ़्र का फ़तवा देने और दूसरे मामलों में सोशल बाईकाट करने का फ़तवा पहले हमारे विरोधी मौलवियों ने दिया।

जब इस बारे में उनकी ओर से पहल हुई तो प्रतिक्रिया के रूप में बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या की ओर से यह सिद्धांत अपनाया गया कि जो कोई एक कलिमा पढ़ने वाले को काफ़िर कहता है तो हदीस के अनुसार वह कुफ़्र उलट कर उसी पर पड़ता है। अतः हमारे विरोधी भी इस फ़तवे के अनुसार काफ़िर बन गये। अब हम भी उनके पीछे नमाज़ न पढ़ेंगे। और न उन से निकाह के बन्धन बांधेंगे।

हमारे विरोधी जो यह एतराज़ करते हैं कि अहमदी अपनी जमाअत के अतिरिक्त अन्य लोगों को काफ़िर कहते हैं, उन्हें भली प्रकार यह याद रखना चाहिए कि कुफ़्र का फ़तवा पहले स्वयं उन्हीं के मौलवियों ने जमाअत अहमदिय्या पर लगाया। जमाअत अहमदिय्या ने 'तकफ़ीरुल मुसलिमीन' (मुसलमानों को काफ़िर कहना) में कदापि पहल नहीं की। इसी बात को हज़रत बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या अलैहिस्सलाम ने इस प्रकार बयान फ़र्माया है कि

> "क्या कोई मौलवी या कोई और विरोधी या कोई 'सज्जादह नशीन' यह सबूत दे सकता है कि पहले हमने इन लोगों को काफ़िर ठहराया था। यदि कोई ऐसा काग़ज़ या इश्तिहार या पत्रिका हमारी ओर से उन लोगों के कुफ़्र के फ़तवे से पहले प्रकाशित हुआ है जिसमें हमने विरोधी मुसलमानों को काफ़िर ठहराया हो, तो वे दिखाएं। अन्यथा स्वयं सोच लें कि यह कैसा भ्रष्टाचार है कि काफ़िर तो ठहरावें आप और फिर हम पर यह इल्ज़ाम लगावें कि जैसे कि हमने सारे मुसलमानों को काफ़िर ठहराया है.................फिर जबकि हमें अपने फ़तवों द्वारा काफ़िर ठहरा चुके और आप ही इस बात से सहमत भी हो गये कि जो व्यक्ति मुसलमान को काफिर कहे तो कुफ़्र उलट कर उसी पर पड़ता है, तो इस दशा में क्या हमारा हक़ न था कि उन्हीं के तथ्य के अनुसार हम उन्हें काफ़िर कहते।"

(हक़ीक़तुल वही पृष्ठ 120)

इसी प्रकार आपने फ़र्माया

मुझको काफ़िर कहके अपने कुफ़्र पर करते हैं मुहर,
ये तो सब है शकल उनकी, हम तो हैं आईना दार।

एक आसान इलाज

परन्तु यदि इतना होने पर भी आजकल हमारे मुसलमान भाईयों की मांग हो कि जमाअत अहमदिय्या अपने इस तथ्य पर दोबारा विचार करके इस तकफ़ीर को वापिस ले ले तो इसके लिये हज़रत बानी-ए-जमाअत अहमदिय्या ने अपनी इसी किताब 'हक़ीक़तुल वही' के पृष्ठ 164, 165 में यह "आसान इलाज" बयान फ़र्माया है कि:

"यह एक शरीयत की समस्या है कि 'मोमिन' को 'काफ़िर' कहने वाला आख़िर काफ़िर हो जाता है। फिर जब कि लगभग दो सौ मौलवियों ने मुझे काफ़िर ठहराया और मुझ पर कुफ़्र का फ़तवा लिखा गया और इन्हीं के फ़तवे से यह बात साबित है कि मोमिन को काफ़िर कहने वाला काफ़िर हो जाता है और काफ़िर को मोमिन कहने वाला भी काफ़िर हो जाता है तो अब इस बात का आसान इलाज है कि यदि दूसरे लोगों में ईमानदारी का बीज है और वे 'मुनाफ़िक' नहीं हैं तो उन को चाहिए कि उन मौलवियों के बारे में एक लम्बा इश्तिहार हर एक मौलवी के नाम के स्पष्टीकरण के साथ प्रकाशित कर दें कि यह सब काफ़िर हैं क्योंकि इन्होंने एक मुसलमान को काफ़िर बनाया, जब मैं उनको मुसलमान समझ लूँगा। परन्तु शर्त यह है कि उनमें धोखे का शक न पाया जाए, और ख़ुदा के खुले खुले चमत्कारों को झुठलाने वाले न हों।"

बस जब तक वे लोग जो अहमदी नहीं हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर फ़तवा देने वालों के कुफ़्र का इश्तिहार न दें तब तक यह समस्या हल नहीं हो सकती। यह आसान इलाज हुज़ूर ने कई बार 'अलहकम' और 'बदर' अख़बार में भी प्रस्तुत किया है। परन्तु किसी

को भी इस तरीके पर कार्य करने की हिम्मत नहीं हुई और न आगे कभी हो सकती है। हम पर मुसलमानों को काफ़िर कहने की आपत्ति उठाने वालों पर यह पंक्तियां बिलकुल उचित हैं कि:

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम,
वे क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता।

वास्तविकता

भाईयो ! जमाअत अहमदिय्या के विरोध में मौलवियों की यह कार्य विधि हमें हैरान करने वाली नहीं। क्योंकि हज़रत शेख़ मुहीउद्दीन इब्ने अरबी अलैहिर्रहमह फ़र्माते हैं कि:

जब इमाम महदी प्रकट होंगे तो उनके शत्रु विशेष रूप से मौलवी ही होंगे। (अनुवाद) *(फ़तूहाते मक्किया जिल्द 2 पृष्ठ 242)*

वास्तविकता यह है कि जमाअत अहमदिय्या एक शुद्ध इस्लामी जमाअत है जो हक़ीक़ी इस्लाम को स्थापित करने वाली और अपने नबी ख़त्मुल-मुरसलीन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सच्चे आशिक़ों की जमाअत है। यह वह जमाअत है जिसके द्वारा इस्लाम की अद्वितीय प्रणाली जारी हो चुकी है। यही वह अकेली जमाअत है जिस में नबुव्वत पर आधारित ख़िलाफ़त जारी है। जिसका एक इमाम है जिसका आज्ञा का पालन करना आवश्यक है। और 'यदुल्लाहे अललजमाअत' (अल्लाह का हाथ जमाअत पर होता है) के अनुसार अल्लाह तआला की मदद पाने वाली जमाअत है। और इसी जमाअत ने वर्तमान नास्तिकता और भौतिकवाद के युग में इस्लामी संस्कृति का श्रेष्ठ नमूना प्रस्तुत किया है। शायरे मशरिक़ अल्लामा इक़बाल फ़र्माते हैं:

"पंजाब में इस्लामी संस्कृति का श्रेष्ठ नमूना इस जमाअत के रंग में प्रकट हुआ है जिसे क़ादियानी फिरक़ा कहते हैं।"

(मिल्लते बैज़ा पर एक उमरानी नज़र पृष्ठ 17-18)

इसी प्रकार अल्लामा 'न्याज़ फ़तेहपुरी' लिखते हैं :

"इस समय सारी उन जमाअतों में जो अपने आप को इस्लाम से सम्बन्धित मानती हैं केवल एक जमाअत ऐसी है जो इस्लाम के संस्थापक की निश्चित की हुई जीवन डगर पर पूरी स्थिरता के साथ चली जा रही है। चाहे इस का एहसास अकेले मुझ ही को नहीं बल्कि अहमदी जमाअत के विरोधियों को भी है, परन्तु अन्तर यह है कि मुझे इस के बताने में कुछ हिचकिचाहट नहीं और उनको अपने अहंकार या हीन भावना के कारण इसे स्वीकार करने में आपत्ति है।

(रिसाला निगार, नवम्बर 1959)

अतः हमारे विरोधी जितनी चाहें हमारे विरुद्ध भ्रांतियां फैलाएं, जितने चाहें झूठे परापेगंडे करें, जितने चाहें हम पर कुफ़्र के फ़तवे लगाएं, जितना जी चाहें बुरा भला कहें, हमें इस्लाम से बाहर अल्प-संख्यक घोषित करने के लिये जितनी चाहें क़ानूनी धाराएं पास कर लें, लेकिन यह याद रखें कि जमाअत अहमदिय्या का सौ वर्षीय इतिहास साक्षी है कि अन्त में हमारे विरोधी ही नाकाम हुए। और जिस जमाअत को मिटाने के लिये उन्होंने नाख़ुनों तक ज़ोर लगाया वह जमाअत ख़ुदा के फ़ज़ल से दुनिया में चारों ओर पक्की व मज़बूत नीवों पर उन्नति करती चली जा रही है। और भगवान ने चाहा तो जमाअत अहमदिय्या के जीवन की दूसरी शताबदी इस्लाम की विजय की शताब्दी होगी हम विश्वास रखते हैं कि जितना हमारा विरोध किया जाएगा उतना ही हमारी जमाअत उन्नति करती जाएगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फर्माते हैं:

"विश्वास रखो और कान खोल कर रखो कि मेरी आत्मा तबाह होने वाली आत्मा नहीं, और 'मेरी सरिश्त' में नाकामी का ख़मीर नहीं (मैं जिस मिट्टी से बना हूँ उसमें असफलता का कहीं नाम नहीं) मुझे वह हिम्मत और सच्चाई दी गई है जिसके आगे पहाड़ भी कुछ नहीं हैं............और शत्रु अपमानित होंगे और जलने वाले शर्मिंदा। और ख़ुदा अपने बंदे को हर मैदान में विजय देगा। मैं उसके साथ

हूँ और वह मेरे साथ है।" *(अनवारुल इस्लाम पृष्ठ 23)*

और आप फ़र्माते हैं कि:

"ख़ुश रहो और ख़ुशी से उछलो कि ख़ुदा तुम्हारे साथ है। यदि तुम सत्य और ईमान पर स्थिर रहोगे तो फ़रिशते तुम्हें शिक्षा देंगे। और आकाशीय शान्ति तुम पर उतरेगी। और रुहुलक़ुदुस से तुम्हारी मदद की जाएगी। और ख़ुदा हर एक कदम में तुम्हारे साथ होगा। और कोई तुम पर विजयी नहीं हो सकेगा। ख़ुदा के फ़ज़ल की सब्र से प्रतीक्षा करो। गालियां सुनो और चुप रहो। मारें खाओ और सब्र करो। और जहां तक हो सके बुराई के मुकाबले से बचो। ताकि आकाश पर तुम्हारी स्वीकृति लिखी जावे।"

(तज़करतुशशहादतैन पृष्ठ 54)

इसी प्रकार आप फ़र्माते हैं:

"हे सारे लोगो! सुन रखो कि यह उसकी भविष्यवाणी है जिसने धरती और आकाश बनाया। वह अपनी इस जमाअत को सारे देशों में फैला देगा और दलीलों एवं तर्कों के द्वारा सब पर उनको विजय देगा। वे दिन आते हैं बल्कि समीप हैं कि संसार में केवल यही एक धर्म होगा जो आदर से याद किया जाएगा। ख़ुदा इस धर्म और जमाअत में बहुत अधिक [illegible] डालेगा और हर एक को जो इसको समाप्त करने की कोशिश करता है, नाकाम रखेगा और यह विजय सदा के लिये होगी यहां तक कि क़यामत आ जाएगी।"

(तज़करतुश्शहादतैन पृष्ठ 64)

दुआ है कि अल्लाह हमारे मुसलमान भाईयों को सत्य की पहचान करने की बुद्धि दे ताकि उन्हें भी वर्तमान युग में भगवान की इच्छानुसार हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की पवित्र जमाअत के साथ मिल कर इस्लाम का प्रचार और सेवा करने का अवसर मिले। वे भी ख़िलाफत इस्लामिया अहमदिय्या की बरकतों से माला माल हों। और ख़ुदा तआला हमें इस्लाम की विजय के दिन जल्दी दिखाए। आमीन

हमारे धर्म का साराँश

फ़रमान हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम

"हमारे धर्म का सारांश और आधार यह है कि لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ और हमारी आस्था जो हम इस सांसारिक जीवन में रखते हैं, जिसके साथ हम ख़ुदा के फ़ज़ल से इस संसार से जाएंगे यह है कि हज़रत सय्यदना व मौलाना मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम 'ख़ातमुन्नबीय्यीन और ख़ैरुल मुरसलीन हैं जिनके हाथ से धर्म की पूर्ति हो चुकी है। और अल्लाह की वह देन पूरी हो चुकी जिसके द्वारा मनुष्य सीधे मार्ग पर चल कर अल्लाह तक पहुँच सकता है। और हम पूर्ण विश्वास के साथ इस बात पर ईमान रखते हैं कि पवित्र क़ुर्आन आख़री आसमांनी किताब है। और एक अंश उस की सीमा से अधिक नहीं हो सकता है और न कम हो सकता है और अब कोई ऐसी आकाशवाणी भगवान की ओर से नहीं हो सकती जो पवित्र क़ुर्आन के हुक्म को रद्द करे या बदले। यदि कोई ऐसा सोचता है तो हम उसे मोमिनों की जमाअत से बाहर व काफ़िर समझते हैं और हमारा इस बात पर भी ईमान है कि सीधे मार्ग पर चलने का छोटे से छोटा दर्जा भी हमारे नबी की आज्ञा का पालन करने के बिना मनुष्य को प्राप्त नहीं हो सकता तो फिर भला यह महान दर्जा बिना आज्ञापालन के कहां प्राप्त होगा ? कोई बड़ा और अलौकिक पद और सम्मान अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी के बिना हम प्राप्त नहीं कर सकते।"

(इज़ाला औहाम भाग पहला पृष्ठ 137, 138)